



Hargharpanditji

॥ संकटमोचन हनुमानाष्टक ॥
राम भक्त हनुमान जी की जय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ संकटमोचन हनुमानाष्टक ॥

बाल समय रवि भक्ष लियो तब,
तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो॥

देवन आनि करी बिनती तब,
छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि शाप दियो तब,
चाहिय कौन विचार बिचारो॥

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥२॥

अंगद के संग लेन गए सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो॥

हेरि थके तट सिंधु सबै तब,
लाय सिया-सुधि प्राण उबारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥३॥

रावण त्रास दई सिय को सब,
राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो॥

चाहत सीय अशोक सों आगि सु,
दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥४॥

बाण लग्यो उर लछिमन के तब,
प्राण तजे सुत रावण मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,
तबै गिरि द्रोण सु वीर उपारो॥

आनि सजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥५॥

रावण युद्ध अजान कियो तब,
नाग की फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो॥

आनि खगेस तबै हनुमान जु,
बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥६॥

बंधु समेत जबै अहिरावण,
लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि,
देउ सबै मिलि मंत्र विचारो॥

जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥७॥

काज किए बड़ देवन के तुम,
वीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहि जात है टारो॥

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो॥८॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥
॥ श्री संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥